राधा–देश, पेटिट सोमेन ५,
६६४० सेप्टन–डर्बी, बेल्जियम ।
भीमा एकादशी, ३० मई, २००४

संदेश संख्या – ६७

मुक्ति, निर्वाण और स्वतन्त्रता

कृष्ण अर्थात् शाश्वत प्रज्ञा (अखण्ड चैतन्य) की प्रेरणा से पुनः अट्ठारह प्रत्यक्ष बोध प्रस्तुत किए जा रहे हैं :–

१. मस्तिष्क की सम्पूर्ण क्षमता से कार्य करना स्वतंत्रता है न कि उसके १० से १५ की सामान्य सीमा में कार्य करना । क्या यह वह प्रेम है जो सम्पूर्ण मस्तिष्क को जागृत करता है ?

२. स्मृति और बुद्धि (स्मृति के उपयोग की क्षमता) मस्तिष्क के कम्प्यूटर हैं। मन (मानसिक प्रदूषण) और अहंकार (मन को लगातार कायम रखना) इस कम्प्यूटर को क्षति पहुंचाने वाले विषाणु और विष–ग्रन्थि हैं । इन विष–ग्रन्थियों एवं विषाणुओं का न होना ही मुक्ति है।

३. विभेदकारी चित्तवृत्ति अर्थात् मन यानी कि ''मैं'' और ''मेरा'' पर महत्वाकांक्षा, मात्सर्य, धन लोलुपता, धन संचयता, आक्रामकता और आशंका का प्रबल प्रभाव रहता है जिसके फलस्वरूप यह विभदकारी चित्तवृति भगवत्ता, जो निर्वाण का ही दूसरा नाम है, के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर पाता ।

४. मानव अस्तित्व के प्रत्येक स्तर पर विखण्डन का मूल कारण मानव चेतना में विखण्डन, अलगाव, विभाजन और द्वैत का होना है । मानव मस्तिष्क की आंशिक क्रियाशीलता से उत्पन्न द्वैत एवं दुविधा ने मानव जाति की शांति और स्वच्छंदता को क्षत–विक्षत कर दिया है । मानव मस्तिष्क, मानव मस्तिष्क मात्र है। यह न तो 'मेरा' या 'तेरा', 'अंग्रेजी' या 'फ्रांसीसी', 'अमरीकी' या 'अफ्रीकी' होता है और न ही 'राष्ट्रपति' का या एक 'अदना सिपाही' का मस्तिष्क होता है । दुर्भाग्य यह है कि यह मानव–मस्तिष्क सदैव सुरक्षा की आकांक्षा, असुरक्षा की आशंका, परनिर्भरता, सुख–दुख, हास्य–रुदन, हर्ष–विषाद, उल्लास और अवसाद के द्वन्द्व से उत्पन्न चित्तवृत्ति के मकड़जाल में उलझा रहता है ।विखण्डन एवं द्वैत से मुक्ति ही भगवत्ता है । इससे इतर कोई भगवत्ता नहीं। पूर्ण जागरूकता ही भगवत्ता एवं प्रबोध है । यही पूर्ण एवं शर्त–रहित स्वतंत्रता है ।

५. विभेदकारी चित्तवृत्ति जिसे हम चेतना मान लेते हैं, वह कई अवयवों से बनी है तथा यह स्वयं ''मैं'' भी इसका एक अवयव है। ''मैं'' वास्तव में वही चित्तवृत्ति है। ''मैं'' के अवयव बिल्कुल वही हैं जो चित्तवृत्ति के हैं, जिन्हें ''मैं'' अनुभव करता है । इसलिए 'मेरी चित्तवृत्ति'–कहना ठीक नहीं है क्योंकि 'मैं' और 'चित्तवृत्ति' दो अलग अस्तित्व नहीं हैं । यह तो मन (विष–ग्रन्थि) और अहंकार (व्याधि–कीट) की आत्म–संरक्षी यंत्र–रचना है जो बड़ी चालाकी से मस्तिष्क में सदियों पुराने अनुकूलनों के आधार पर बड़े ही प्रच्छन्न रूप से इन दोनों में विलगाव पैदा कर देता है । यह विभेदकारी चित्तवृत्ति के विखण्डनों को और भी स्थायित्व प्रदान करता है जो निपट स्वार्थपरता को जन्म देता है । यहीं से मानवीय संबंधों में दूरी बढ़ने लगती है, जिसके फलस्वरूप मूल मानव चेतना (अखण्ड चैतन्य) का प्रत्यक्ष बोध नहीं हो पाता । अन्यथा, हम ही संसार हैं और सारी पृथ्वी हमारी है । यह चीनी या अमरीकी धरती नहीं है । जीवन और प्रेम का यह अविभेदकारी प्रत्यक्ष बोध ही स्वतंत्रता है, न कि तुच्छ अवधारणायें, मन द्वारा निर्मित निष्कष और प्रेम तथा करुणा के नाम पर की गई शरारतें ।

६. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, पारम्परिक रीति–रिवाज और अनुबन्धन समविादी के विपरीत एक व्यक्तिवादी 'मैं' को बढ़ावा देते हैं और इसी कारण अलग–अलग विश्वास–पद्धतियों में विद्यमान ''उद्धारकों'' के माध्यम से उसकी 'सफलता' एवं 'मुक्ति' का अलग–अलग एवं सुस्प कार्यक्रम होता है । यही मूल मानव चेतना की सर्वव्यापकता को समझने में बाधक है । इस तुच्छ व्यक्तिवाद का न होना ही स्वतंत्रता है ।

७. चित्तवृत्ति में ''मैं'' और 'मेरी चेतना' जैसा विभाजन मानव अस्तित्व की विभिन्न इकाइयों, यथा–परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व में फैलने लगता है। इससे प्रत्येक स्तर पर 'मैं' 'मैं' 'मैं' और 'तू' 'तू' 'तू' का राक्षसी विस्तार होता है जिसके परिणाम बड़े अनर्थकारी होते हैं । इस प्रपंचपूर्ण प्रक्रिया के दुश्चक्र से मुक्ति ही वास्तविक स्वतंत्रता है ।

८. इस द्वैत का चरम विस्तार 'मैं' और मेरा 'भगवान' है, और यही दुर्भाग्य से ''मैं'' के चरम लोभ, तुष्टीकरण, अपराध एवं अपराध बोध ग्रस्तता का कारण हो जाता है और इसीलिए भगवान के नाम पर होने वाले 'धर्म युद्ध' में मानवता न होती है । मन की धूर्त अवधारणाओं से मुक्त रहते हुए इस सच्चाई को समझना ही स्वतंत्रता है और यही भगवत्ता है (ध्यान रहे कि भगवत्ता ''भगवान'' नहीं है) ।

९. ध्यान ही स्वतंत्रता है । यह इस अपरिमेय को मापने की प्रक्रिया का परिसमापन है ।

१०. क्या मस्तिष्क तकनीकी प्रयोजनों हेतु अर्जित जानकारी में अपने मानसिक लगाव को अंकित करना बन्द कर सकता है ? मानसिक अवशेष एवं तलछट से छुटकारा पाने के बाद ही ज्ञात से मुक्ति का आविर्भाव होता है, हालॉकि दैनिक क्रियाकलापों के निष्पादन हेतु तब भी ज्ञात अस्तित्व में बना रहता है ।

११. चेतना में शून्यता का होना ही स्वतंत्रता है । जब चेतना में शून्यता का अभाव होता है तब यह विचारों से ग्रस्त एवं धुँधली होती है और इसी से सारी समस्यायें उत्पन्न होती हैं । उत्कृ या अनुत्कृ को पाने की आकांक्षा इस शून्यता के क्षेत्र को संकीर्ण कर देती है और हृदय की उदारता एवं विशालता को सीमित करती है ।

१२. विचारों की आपाधापी से मुक्त मस्तिष्क की शून्यता ही स्वतंत्रता है । यह प्रयत्नपूर्वक मस्तिष्क को निष्क्रिय करना नहीं है बल्कि बिना किसी प्रयत्न के मस्तिष्क में शून्यता उत्पन्न होती है । इस अवस्था में ही सौन्दर्य से पूर्ण उस परम–पावन का अवतरण होता है । यह सभी विश्वास–पद्धतियों, प्रयोजनों एवं छवियों से मुक्ति है। इस मुक्ति के विस्फोट से आँखों में मासूमियत आ जाती है जिसका आशीर्वाद है–प्रेम ।

१३. अखण्ड जागरूकता ही मुक्ति है । यह जागरूकता न तो विचार है और न ही विचारक । विचारक अपने समस्त पूर्वाग्रहों, दावों, विकल्पों, वर्गीकरणों एवं तर्कों के साथ अतीत है जबकि जागरूकता यहाँ और अभी विद्यमान है । सिर्फ 'मैं' और 'तुम' के लिए नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानवता के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण वह अनाम अस्तित्व ऐसी अखण्ड जागरूकता में ही प्रकट होता है ।

१४. मुक्ति की इस अवस्था में साक्षी भाव में होना ही जीवन की क्रिया है । चाहना मात्र बन्धन है और इसलिए मन की गतिविधि है । प्रत्यक्ष बोध की क्रिया ही स्वतंत्रता है ।

१५. अतीत के उन्माद और विषाद का अन्त ही मुक्ति है । यह मन और अहंकार द्वारा एकत्र कूड़े–कचरे की सफाई है । शारीरिक व्यायाम के रूप में प्रचलित योग से यह मुक्ति संभव नहीं है ।

१६. मुक्ति की अवस्था में ही, जैसे आप हैं वैसे ही जीवन जीने की समझ हो जाती है, न कि जैसा आप सोचते हैं कि आपको होना चाहिए या जैसा आप थे ।

१७. द्रष्टारहित अर्थात् बिना किसी उत्तेजना, छद्म नम्रता, भय, स्पष्टीकरण, निन्दा या चेतना को 'पुण्यात्मा' और 'पापात्मा' में विखंडित किए बिना 'स्व' का दर्शन ही मुक्ति है और यही स्वध्याय है ।

१८. स्वतंत्रता अनाम और एकाकी है । यह साहस है–अव्यक्त प्रयोजनों को त्याग कर दृश्यमान जगत में उपस्थित सभी विषयों का उत्साहपूर्वक परीक्षण करने का। अतः मन के समस्त विकारों की समाप्ति ही मुक्ति है ।

हरि बोल, हरि बोल, हरि हरि बोल
मुकुन्द माधव गोविन्द बोल ।